

प्रस्तावना

मनोवैज्ञानिकों का यह मानना है कि बच्चे के भाषिक संस्कार जन्मजात होते हैं, परंतु सामाजिक वातावरण उसे योग्यता के विकास का अवसर अवश्य देता है। यदि बच्चे को उपयुक्त वातावरण न मिले तो वह अपनी योग्यताओं का समुचित विकास नहीं कर पाएगा। बच्चे के भाषिक विकास में कई कारक सहायक होते हैं, जिनमें प्रमुख हैं - आयु, प्रज्ञा, रुचि, स्वास्थ्य, लिंगभेद, पारिवारिक स्थिति, सामाजिक परिवेश, विद्यालयी वातावरण, शिक्षण सामग्री आदि।

सभी प्रकार के अध्ययन के मूल में भाषा है। बिना भाषा के किसी भी विषय पर अध्ययन करना असंभव है। सृष्टि के प्रारम्भ में भाषा के अभाव में अभिव्यक्ति भी कम हो पाती थी। धीरे-धीरे सभ्यता के विकास के साथ भाषा का विकास हुआ और इसी भाषा के विकास के साथ साहित्य तथा ज्ञान-विज्ञान का विकास हुआ। धीरे-धीरे 'भाषा' मनुष्य के अध्ययन का विषय बनता गया। मनुष्य की रुचि केवल अपनी भाषा तक ही सीमित न रही, बल्कि अन्य भाषाओं की ओर भी रुचि बढ़ने लगी। सामाजिक, व्यावसायिक आदि कारणों से मनुष्य अन्य भाषाएँ सीखने लगा। जिसके परिणाम स्वरूप अन्य भाषा शिक्षण की अनेक पद्धतियों का विकास हुआ। भाषा-शिक्षण में व्यवस्थित अध्ययन होने लगा। शिक्षण का उद्देश्य अब केवल स्वर तथा व्यंजन के ज्ञान तक ही सीमित न रहा, बल्कि मनोविज्ञान तथा भाषाविज्ञान के ज़रिए विद्यार्थियों के मानस का संस्कार होने लगा। इस तरह भाषा के शिक्षण के द्वारा भाषाई कौशलों का विकास हुआ। धीरे-धीरे भाषाविज्ञान की एक शाखा के रूप में भाषा-शिक्षण के व्यवस्थित रूप का विकास होने लगा। भाषा-शिक्षण व्यावहारिक स्तर पर जितना सरल प्रतीत होता है, दरअसल सैद्धान्तिक स्तर इससे काफ़ी भिन्न है। कक्षा में प्रत्येक विद्यार्थी के स्तर, भाव, सामाजिक, आर्थिक परिवेश आदि को ध्यान में रखकर शिक्षा दे पाना निश्चय ही अध्यापक के लिए चुनौती

है, और जहाँ बात अहिंदी प्रदेश में हिन्दी शिक्षण की हो, वहाँ मुश्कीलें और बढ़ जाती हैं। ऐसे में अध्यापक के लिए भाषा-शिक्षण से संबन्धित सभी विषयों का पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक है। यदि अध्यापक भाषा-शिक्षण का सैद्धान्तिक परिचय प्राप्त कर लेते हैं, तो इस समस्या का एक सीमा तक सामना कर सकते हैं।

प्रस्तुत शोध का आधार हिन्दी भाषा-शिक्षण के अंतर्गत आने वाले चारों भाषाई कौशल तथा व्याकरण हैं जिनकी सहायता से असम में विद्यालयों, विशेष रूप से नगाँव जनपद के विद्यालयों का अनुशीलन हुआ है। इस संदर्भ में भाषा के सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक दोनों रूपों पर विचार किया गया है। भाषा के सैद्धान्तिक पक्ष में हिन्दी भाषा के स्वरूप एवं विकासयात्रा को दर्शाते हुए हिन्दी भाषा-शिक्षण के विविध आयामों पर विस्तारपूर्वक विचार किया गया है। भाषा के व्यावहारिक पक्ष के अंतर्गत असम तथा नगाँव में हिन्दी-शिक्षण की सामान्य रूपरेखा को दिखाते हुए हिन्दी भाषा-शिक्षण के आधार पर नगाँव जिले में विद्यार्थियों तथा शिक्षकों का विश्लेषण किया गया।

नगाँव के स्कूल निरीक्षक कार्यालय (School Inspector Office) से चार विद्यालय प्रस्तुत शोध-सर्वेक्षण हेतु प्राप्त हुए। ये विद्यालय हैं - डॉ. एस. के. भूयाँ हाई स्कूल, मोरीकोलॉग हाई स्कूल, हैबरगाँव आदर्श हाई स्कूल, रत्न कान्त बोरकाकोटी हाई स्कूल।

प्रस्तुत शोध-प्रविधि का आधार विश्लेषणात्मक है जहाँ परिमाणात्मक तथा गुणात्मक दोनों रूपों से विश्लेषण किया गया है।

इन चार सालों में इस शोध के दौरान कई बातें सामने आईं। कई दिक्कतें तथा मुश्कीलें भी आईं परंतु शोध के पूर्ण होने पर जो हर्ष एवं संतुष्टि प्राप्त हुई, उसको शब्दों में बयान करना कठिन है। एक शोधार्थी होने के साथ ही मैं पेशे से एक शास्त्रीय नृत्यांगना भी हूँ। नृत्य और पढ़ाई दोनों ही मुझे बेहद पसंद हैं तथा दोनों के लिए समान रूप से समय निकाल पाना इतना आसान नहीं है क्योंकि दोनों का अध्ययन बहुत ही गहन एवं विस्तृत

हैं। इसीलिए मैं अपने गुरु तथा शोध-निर्देशक डॉ. सूर्यकांत त्रिपाठी सर का तहे दिल से शुक्रिया अदा करना चाहूँगी जिन्होंने मुझे इस शोध को बिना किसी रोक-टोक के स्वतंत्र रूप से करने का मौका दिया। जहाँ सुधार की ज़रूरत हुई वहाँ उन्होंने सदैव मार्ग दिखाया है।

इस शोध को पूरा करने में परिवार जनों का बहुत साथ रहा। स्वर्गीय माँ रीना शङ्कीय बोरा, पिताजी श्री जयंत कुमार बोरा, बहन उपासना बोरा एवं परिवार के बाकी सभी सदस्यों ने हमेशा हौसला अफ़जाई किया। खेद है कि माँ इस शोध को पूर्ण होता हुआ देख नहीं पाईं लेकिन आशा है कि उनका आशीर्वाद और प्रेम सदैव मेरे साथ है।

विभाग के अन्य शिक्षकगण प्रो. अनंत कुमार नाथ सर , डॉ. अनुशब्द सर, डॉ. अंजुलता मैम ने शोध कार्य को आगे बढ़ाने में बहुत मदद कीं, तथा विभाग के कार्यालय के संचालक श्री शशि इंग्ती दा ने भी जब भी ज़रूरत पड़ी, सहायता कीं। इन सभी का बहुत-बहुत धन्यवाद।

इस शोध के दौरान कई विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों से मदद मिलीं। दिल्ली विश्वविद्यालय, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय तथा केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, गुवाहाटी से कई महत्वपूर्ण पुस्तकें प्राप्त हुईं जिनका शोध कार्य को आगे बढ़ाने में काफ़ी योगदान रहा है।

क्षेत्र सर्वेक्षण के दौरान काफ़ी लोगों से साक्षात्कार, वार्तालाप तथा संलाप हुआ। नगाँव जिले के स्कूल निरीक्षक (School Inspector) श्री मृदुल नेओग ने काफ़ी सहयोग दिया है। उनको हार्दिक धन्यवाद देना चाहूँगी। योजना और सांख्यिकीय अधिकारी (Planning and Statistical Officer) श्री कनक बेज़बरुआ के सहयोग के लिए भी उनका धन्यवाद ज़ापन करना चाहूँगी। जिन विद्यालयों में जाकर मैंने नमूने प्राप्त किए, उन विद्यालयों के प्राध्यापकों तथा सभी अध्यापकों को उनके पूर्ण सहयोग के लिए मैं उनका धन्यवाद

जापन करूँगी। असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के मंत्री डॉ. क्षीरदा कुमार शङ्कीया जी से असम में हिन्दी की नींव तथा विकास के बारे में काफी चर्चा हुई। उनके बहुमूल्य समय के लिए उनका आभार व्यक्त करना चाहूँगी। केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, गुवाहाटी केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. हेमराज मीणा जी से असम में हिन्दी की स्थिति तथा हिन्दी के शिक्षकों पर काफी कुछ वार्तालाप हुई। उनका भी बहुत-बहुत आभार व्यक्त करना चाहूँगी। अपने सभी दोस्तों का (सुचित्रता, चंद्रमा, नज़रीना, जिंती, रिजु, कल्याणी, हरिप्रिया) जिन्होंने हमेशा जब भी मुझे ज़रूरत पड़ी, मेरा साथ दिया। उनको ढेर सारा प्यार और धन्यवाद देना चाहूँगी।

बच्चे देश का भविष्य हैं। उम्मीद है प्रस्तुत शोध कार्य बच्चों के उज्ज्वल भविष्य को सींचने में सफल सिद्ध होगी।

यह शोध प्रबंध अपनी स्वर्गीय माँ को समर्पित करते हुए -